भाषा की परिभाषा → भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान प्रदान करता है।

जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से साझा कर सकें और दूसरों के भावों को समझ सकें उसे भाषा कहते हैं।

सामान्यतः भाषा मनुष्य की सार्थक वाणी को कहते हैं, बच्चों! आदिमानव अपने मन के भाव, इच्छाओं को समझने व समझाने के लिए संकेतों का सहारा लेते थे, परन्तु संकेतों से पूरी बात समझा पाना बहुत कठिन था। अपने मित्रों के साथ संकेतों से बात समझाने के खेल खेले होंगे। उस समय आप को अपनी बात समझाने में बहुत कठिनाई हुई होगी। ऐसा ही आदिमानव के साथ होता था। इस असुविधा को दूर करने के लिए उसने अपने मुख से ध्वनियों को मिलाकर शब्द बनाने आरम्भ किए और शब्दों के मेल से बनी — भाषा।

भाषा शब्द संस्कृत के भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - बोलना।

कक्षा में अध्यापक अपनी बात बोलकर समझाते हैं और छात्र सुनकर उनकी बात समझते हैं। इसी प्रकार बच्चा माता-पिता से बोलकर अपने मन के भाव प्रकट करता है और वे उसकी बात सुनकर समझते हैं। छात्र भी अध्यापक द्वारा समझाई गई बात को लिखकर प्रकट करते हैं और अध्यापक पढ़कर, इसका मूल्यांकन करते हैं। सभी प्राणियों द्वारा मन के भावों का आदान-प्रदान करने के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है, परन्तु पक्षियों के

(2)

वैसे भी भाषा की परिभाषा देना एक कठिन कार्य है। फिर भी भाषा वैज्ञानिको ने इसकी अनेक परिभाषा दी है। किन्तु ये भाषा परिपूर्ण नही है। इन मे कुछ न कुछ त्रुटि पायी जाती है।
आचार्य देवनारायण शर्मा ने भाषा कि परिभाषा इस प्रकार बतायी है। उच्चरित ध्वनि संकेतो की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अथवा जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय या सहयोग करते है उस याद्दच्छिक। रूढ ध्वनि संकेत की प्रणाली को भाषा कहते है।
यहा तीन बाते विचारणीय है — (1) भाषा ध्वनि संकेत है,
(2) वह याद्दच्छिक है।
(3) वह रूढ है।

सार्थक शब्दों के समूह या संकेत को भाषा कहते है। यह संकेत स्पष्ट होना चाहिए। मनुष्य के जटिल मनो भावो को भाषा व्यक्त करती है, किन्तु केवल संकेत भाषा नही है। रेलगाडी का गार्ड हरी झण्डी दिखाकर भाव व्यक्त करता है कि गाडी अब खुलने वाली है, किन्तु भाषा मे इस प्रकार के संकेत का कोई महत्व नही है। सभी संकेतो को लोग ठीक-ठीक समझ नही पाते है और न ही इनसे विचार ही सही-सही व्यक्त कर पाते है। सारांश यह है कि भाषा को सार्थक व स्पष्ट होना चाहिए।

भाषा के ध्वनि संकेत रूढ होते है। परम्परा या युगो से इनके प्रयोग होते आए है। औरत, बालक, वृक्ष आदि शब्दो का प्रयोग लोग अनन्त काल से करते आ रहे है। बच्चे, बुढे और जवान इनका प्रयोग करते है। क्यो करते है इसका कोई कारण न